P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-3* November- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय परिवेश में वृद्धों की स्थितिः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Status of Elderly in Indian Setting: A Sociological Study

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

सुजाता मैनवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
मेरठ कॉलेज, मेरठ,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय समाज में वैदिक काल से ही वृद्धजनों को परिवार में अत्यधिक सम्मानित स्थान दिया जाता रहा है परन्तु बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में औद्योगिकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण तथा आधुनिकीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण समाज में तीव्र परिवर्तन हुए और भारतवर्ष में वृद्धों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी है। यह अत्यन्त दुखद है कि वैश्विक रैंकिंग में भारत का नाम वृद्धों के लिए दुनिया की सबसे खराब जगह में शामिल है। वर्तमान भारत में युवा न तो वृद्धों से कुछ सीखना चाहते हैं और न ही उनके नियंत्रण में रहना चाहते हैं। सरकार को चाहिए कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में वृद्धावस्था जैसे विषय शामिल करें। प्रत्येक मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि एक न एक दिन उसे भी वृद्ध होना है और जिस प्रेम और सम्मान की उसे अपने संध्याकाल में जरूरत होंगी, वह आज अपने बुजुर्गों को भी प्रदान करें।

In Indian Society, since the vedic period the elderly have been given a highly respected place in the family, but due to the increasing influence of industrialization, urbanization, westernization and modernization in the beginning of the 20th century, rapid changes took place in the society and the condition of the elderly became very deplorable. It is very sad that India's name in the global ranking is included in the world's worst place for old age people. The youth in present day India, neither want to learn anything from elderly nor want to be under their control. The Government should include subjects like elderly in the school curriculum. Every person should realize that one day he will grow old, so he should provide the same love and respect that he need from others in the final days of his life.

मुख्य शब्दः वृद्धावस्था, समस्याएँ, भारतीय एवं अन्तर पीढ़ी संघर्ष
Key words : Old age, Problems, Indian and intergenerational conflict

प्रस्तावना

जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक मानव चार अवस्थाओं से गुजरता है-शैशवावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था। वृद्धावस्था को जीवन का अन्तिम पड़ाव माना जाता है, जिसकी अवधि है साठ वर्ष की आयु से लेकर मृत्युपर्यन्त तक। प्राचीन भारतीय आश्रम प्रणाली में वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम इस अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं इस अवस्था में व्यक्ति के बाल सफेद हो जाते हैं, चेहरे पर झुरियाँ आ जाती हैं, त्वचा सिकुड़ जाती है, शरीर शिथिल हो जाता है और अनेक प्रकार की बीमारियों से व्यक्ति ग्रसित हो जाता है। भारत में अब वृद्ध लोगों को वरिष्ठ नागरिक अथवा 'सीनियर सिटीजन' कहा जाने लगा है। वैसे तो वृद्धावस्था एक जैविक प्रक्रिया है और इसे रोका नहीं जा सकता है, परन्तु सही खान-पान, व्यायाम, नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, कम तनाव एव आध्यतात्मिकता अपना कर एक सार्थक एवं सक्रिय जीवन जीया जा सकता है।

जनसंख्या में वृद्धों की बढ़ती संख्या को देखते हुए वर्ष 1999 को बुजुर्गों के सम्मान के अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध घोषित किया गया। भारत में भी वर्ष 2000 को राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष के रूप में मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार वर्ष 2050 तक समुचे विश्व में प्रत्येक छः सर्वाधिक बुजुर्गों में एक भारत का निवासी होगा। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्धजनों की संख्या 10:38 करोड़ है। वृद्धजनों के अध्ययन शास्त्र को जेरोण्टोलाजी कहा जाता है।

साहित्यावलोकन

वृद्धावस्था सम्बन्धी कुछ चयनित अध्ययन इस प्रकार हैः-

1. अग्रवाल, गिरिराज (2004) ने बताया कि वृद्धावस्था में शरीर अशक्त हो जाने के कारण बीमारियाँ जल्दी पकड़ लेती है और अधिकतर बुजुर्गों के पास धन का अभाव होता है।
2. हेमवती यू. ओर रानी, बी.एस. (2014) ने उम्र, लिंग और रहने के प्रकार के आधार पर वृद्ध लोगों की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया है।

3. अली, एम.ए. जेड (2014) के अनुसार वृद्ध लोगों की समस्याओं के हल करने के ठोस प्रयास की आवश्यकता है। लेखक ने देखा कि वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्ध लोगों को परिवार के साथ रहने वालों की तुलना में अधिक भावनात्मक समस्याएँ महसूस होती है।
4. सिंह, आर. (2015) ने वृद्ध लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं के साथ-साथ आर्थिक स्थिति के बारे में भी जानकारी दी है। अध्ययन के माध्यम से लेखक ने भारत में वृद्ध लोगों की समस्याओं में योगदान करने वाले कारकों पर भी ध्यान केन्द्रित किया है।
5. राय, सत्येन्द्र नाथ (2016) ने बताया है कि जैसे-जैसे पुत्र-पुत्री बड़े होते हैं, शिक्षित होते हैं, युवावस्था में प्रवेश करते हैं। पुत्री को विवाह कर सुसराल विदा करना होता है और पुत्र को अपने अच्छे भविष्य की तलाश में अपने परिवार अपने शहर से दूर जाना पड़ता है। अंत में परिवार में रह जाते हैं सिर्फ बुजुर्ग पति और पत्नी, यदि बेटा विदेश चला जाता है तो उसे लौटने में भी साल भर लग जाता है।
6. संयुक्त राष्ट्र के ऐजवेल रिसर्च एण्ड एडवोकेसी सेंटर (Agewell Research and Advocacy Centre for the United Nations) द्वारा भारत के 20 राज्यों में मई-जून 2018 में किए गये एक सर्वेक्षण में यह पाया कि अधिकांश बुजुर्गों को परिवार के सदस्यों द्वारा देखभाल और सहायता किये जाने के संबंध में अपने जीवन की परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है और उनमें से 50% से अधिक बुजुर्गों को उपेक्षा और दुव्र्यवहार का सामना करना पड़ता है।

उद्देश्य एवं अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से वृद्धों की स्थिति के विभिन्न पक्षों का अन्वेषण किया गया है। शोधकर्ता की पद्धति ऐतिहासिक, समालोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक है। शोध मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विचारों का विश्लेषण करते हुए उनका प्रयोग द्वैतियक स्रोत के रूप में किया गया है।

वृद्धों की समस्याएँ

ये अत्यन्त दुःख का विषय है कि वृद्धों के लिए दुनिया की सबसे बेहतरीन और दुनिया की सबसे खराब जगहों की वैश्विक रैंकिंग में स्विटरलैंड का नाम सबसे अच्छी जगह और भारत का नाम सबसे खराब जगह में शामिल किया गया है। हेल्पेज इंटरनेशनल नेटवर्क आफ चैरिटीज की ओर से तैयार ग्लोबल एज वाच इंडेक्स में 96 देशों में भारत को 71वां स्थान प्राप्त हुआ है। भारत में वृद्धों की कुछ प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार है:-

परिवारिक समस्याएँ

प्राचीनकाल से ही भारत में घर के वृद्धों को सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त होता आया है लेकिन वर्तमान आधुनिक युग में स्थिति काफी परिवर्तित हो गयी है। प्रायः यह देखने में आया है कि परिवार में वृद्धों को बोझ के समान ढोया जा रहा है, उनकी उपेक्षा की जाती है और परिवार के सदस्यों द्वारा उनकी उचित देखभाल नहीं की जाती है। पाश्चात्य संस्कृति की रंगीन चादर से ढके युवा पुरानी पीढ़ी को अपने सुख-चैन, मौज-मस्ती एवं स्वच्छन्दता में बाधा डालने वाली पीढ़ी समझते हैं। इसलिए कई बार अपने माता-पिता को अपने साथ नहीं रखते है और किसी आश्रम में छोड़ आते हैं। शायद इसलिए वर्तमान भारत में लगभग 855 वृद्धाश्रम हैं और देश के लगभग पन्द्रह प्रतिशत वृद्धजन चाहे वह पुरूष हो या स्त्रियाँ इन वृद्धाश्रम में रहते हैं।

स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ

वृद्धावस्था में व्यक्ति की इन्द्रियाँ कमजोर हो जाती हैं और वह अनेक प्रकार के रोगों जैसे मुधमेह, दृष्टि-दोष, कब्ज, अर्थराइटिस, मोटापा, रक्तचाप, तनाव, डिमेनेशिया, एलजाइमर आदि का शिकार बन जाता है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय भारत की वृद्धों की स्वास्थ्य रिपोर्ट में कहा गया है:-
35 प्रतिशत भारत वृद्धजन गठिया या हड्डी के रोगी हैं:-
10 प्रतिशत सुन नहीं सकते हैं।
गाँवों में 33 प्रतिशत व शहरों में 50 प्रतिशत को हाइपरटेंशन है।
करीब 50 प्रतिशत की नजर कमजोर हैं।
45 प्रतिशत को एनीमिया है।
33 प्रतिशत की पाचन व्यवस्था ठीक नहीं हैं।
गाँवों 10 प्रतिशत और शहरों में 40 प्रतिशत को डायबिटीज है।

आर्थिक समस्याएँ

भारत में चालीस प्रतिशत से अधिक वृद्ध निर्धनता रेखा के नीचे अपना जीवन-यापन कर रहे हैं, जिसमें वृद्ध विधवाओं की संख्या पचपन प्रतिशत है। स्थानीय स्तर पर 30 से अधिक संगठन बुजुर्गों की आय बढ़ाने हेतु गतिविधियों में लगे हुए हैं तथा राष्ट्रीय स्तर पर 'हेल्पेज इण्डिया' नामक एन0जी0ओ0 अपनी 220

परियोजनाओं के माध्यम से वृद्धों के कल्याण के लिए प्रयासरत है परन्तु वर्तमान वृद्धों की जनसंख्या के अनुरूप ये प्रयास पर्याप्त नहीं कहे जा सकते हैं।

मनौवैज्ञानिक समस्याएँ

अकेलापन और मौत का डर भारत में वृद्धों की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्याएँ है। ऐसा भी देखने में आया है कि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी बहुत से वृद्धजन अकेलेपन के कारण डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं। जीवन साथी की मृत्यु हो जाने के कारण, परिवार में सामंजस्य न रख पाने कारण, या बच्चों के कहीं दूर बस जाने के कारण अकेलेपन की समस्या का निर्माण होता है। अनेक विद्वानों ने अध्ययनों के आधार पर यह भी बताया है कि वृद्धजनों में मौत की चिन्ता उनकी मनौवैज्ञनिक संरचना के कमजोर होने का परिणाम है।

सुरक्षा की समस्या

वर्तमान भारत में वृद्धों की सुरक्षा एक अहम् एवं चिंतनीय पहलू है। अकसर धन संपदा के लालच में परिजन, नजदीकी रिश्तेदार या कोई अन्य वृद्धों को अपना शिकार बना लेता है। आए दिन इस प्रकार की घटनाएँ प्रकाश में आती रहती है।

अन्तर पीढ़ी संघर्ष

'अन्तर-पीढ़ी संघर्ष' का अर्थ है दो पीढ़ियों में किन्हीं बातों को लेकर पाया जाने वाला मतभेद, टकराव या विरोध। समाज में सदा से पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच एक अचेतन संघर्ष चलता रहता है। इलियट एवं मैरिल के अनुसार 'प्रत्येक पीढ़ी यह विश्वास करती है कि उसके उत्तराधिकारी सीधे पतन के गर्त में जा रहे हैं। वे यह भूल जाते हैं कि वे भी अपने बड़ों की भयावह चिन्ता के विषय रहे हैं और जो भी परिवर्तन लाने में वे साधन बने हैं, आवश्यक रूप में विनाशकारी सिद्ध नहीं हुए हैं। अन्तर-पीढ़ी संघर्ष कई बार पारिवारिक विघटन को प्रोत्साहित करता है और परिवार में तनावपूर्ण स्थिति का निर्माण करता है।

वृद्धावस्था अधिकार

सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर पर वृद्धजनों के कल्याण हेतु राष्ट्रव्यापी प्रयास किये गये हैं, जिसमें से प्रमुख इस प्रकार हैः-

1. 1952 ई0 में 'लोक भविष्य निधि खाता योजना' भारतीय स्टेट बैंक एवं डाकघरों के माध्यम से, केन्द्र सरकार द्वारा संचालित की गई।
2. 1989 ई0 में 'सरकारी कम्पनियों के कर्मियों की जमा योजना' 1998 ई0 में 'जीवन अक्षय योजना' जीवन सुरक्षा योजना' 1999 ई0 नवभारत योजना क्रमशः केन्द्र सरकार द्वारा तथा भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा प्रायोजित की गई, जिनका उद्देश्य वृद्धावस्था में वृद्ध नागरिकों को समुचित आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना था।
3. 1994-95 ई0 में राज्य सरकार द्वारा संचालित केन्द्र सरकार के सहयोग से 'राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन' द्वारा 53 लाख 35 हजार लोगों के प्रति माह पेंशन देने की व्यवस्था की गई।
4. 1999 ई0 में 'अन्नपूर्णा योजना' राज्य सरकार द्वारा उन लोगों के लिए लागू की गई जिन्हें पेंशन का लाभ प्राप्त नहीं था। इस योजना के अन्तर्गत निराश्रित वृद्धों को 10 किलो चावल या 10 किलो गेहूँ उपलब्ध कराकर उन्हें खाद्यान्न सुरक्षा प्रदान की गई।
5. भारतीय रेलवे वरिष्ठ नागरिकों (65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों) को सभी रेलगाड़ियों के सभी श्रेणियों के किराये में 30 प्रतिशत की छूट देती है।
6. इण्डियन एयरलाइन्स 65 वर्ष से अधिक के सभी बुजुर्गों को सभी घरेलू उड़ानों में वयस्कों के सामान्य किराये में 50 प्रतिशत की छूट देती है।
7. टेलीफोन का बिल जमा कराने के लिए अलग कांउटर की व्यवस्था तथा असहाय वृद्धों के लिए पुलिस आरक्षण की व्यवस्था भी सरकार द्वारा की गई है।
8. अगस्त 2004 में 'सीनियर सिटीजन स्कीम' सभी डाकघरों में लागू की गई जिसमें 60 से ऊपर आयु वाले वृद्धों की जमा धनराशि पर 41 प्रतिशत ब्याज दिया जाता है।
9. जिन वृद्ध जनों का परिवार में या अन्यत्र कोई आश्रय नहीं है, उन्हें सरकार तथा गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा स्थापित 'ओल्ड एज होम्स तथा डे केयर सेन्टर' मे आश्रय प्राप्त हो रहा है।
10. माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक (कल्याण व देखरेख) विधेयक 2006, का उद्देश्य बुजुर्गों को वित्तीय सुरक्षा देना और खुशहाली सुनिश्चित करना है। अपने खर्च चलाने में अक्षम बुजुर्गों को उनके सौतेले बच्चे, गोद लिये बच्चे, नाती-पोती से मासिक भत्ता आदि सुविधाएँ ये कानून दिलवाता है।
11. केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2005 में वृद्ध व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय वृद्धजन परिषद् का पुनर्गठन किया गया जो वृद्धों के बारे में नीतियों और कार्यक्रमों के विकास के लिए सरकार को सलाह और सहायता देती है।
12. स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा दी गई कुछ पहल महत्वपूर्ण हैं, जिनमें बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत अभी तक 21 राज्यो के सौ जिलों में आठ क्षेत्रीय बुजुर्ग चिकित्सा विज्ञान केन्द्र खोले जा चुके हैं। इस महत्वकांक्षी योजना के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के लिए 1,710 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

सुझाव एवं निष्कर्ष

1. बुजुर्गों को समाज का एक आवश्यक अंग मानना चाहिए। इनकी शरण में जीवन गुजार कर भारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण परम्परा को जीवित रखें।
2. यदि सरकारी स्कूलों में पाठ्यक्रम में 'वृद्धों की देखभाल कैसे करें' शामिल करवा सकें तो बच्चे अपने दादा-दादी, नाना-नानी की उचित देखभाल की प्रेरणा या उनके भविष्य को बेहतर बना सकते हैं।
3. वृद्धों को चाहिए कि वे बच्चों का दायित्व निभाने के साथ-साथ अपनी संध्या-वेला के लिए भी कुछ संचित करके रखें। अपनी धन-सम्पत्ति को अपने अधिकार में रखें, जिससे बुढ़ापे में आवश्यकतानुसार सुविधाएँ जुटाई जा सकें।
4. बुजुर्गों को भी चाहिए कि वे नई पीढ़ी के आचरण और क्रिया-कलापों पर अनावश्यक टीका-टिप्पणी न करें और उनकी सीमाओं और विवशताओं को भी समझें।
5. युवा पीढ़ी को चाहिए कि वो अपनी अत्यन्त व्यस्त दिनचर्या में से थोड़ा समय अपने बुजुर्गों के लिए भी निकालें और उनकी भावनाओं को समझने का प्रयास करें।
6. मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः से युक्त संस्कार हमें अपने बच्चों को देने चाहिए। बुजुर्गों के ज्ञान और अनुभव का लाभ उठाकर युवा भविष्य की चुनौतियों का सही समाधान पा सकते हैं।
7. प्रत्येक युवा को अपने वृद्ध माता-पिता की 'बुढ़ापे की लाठी' बनने का प्रयास करना चाहिए और ये याद रखना चाहिए कि हम जो देंगे वहीं पाएगें अर्थात जैसा बोएँगे वैसा काटेंगे।
8. जिस प्रकार बचपन में माता-पिता हमें जेब खर्च दिया करते थे उसी प्रकार हमारा भी ये नैतिक कत्र्तव्य है कि हम अपने बुजुर्गों को उचित जेब खर्च दें।
9. वृद्धों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के लिए भी सरकार को और अधिक प्रयास करने चाहिए। देश के सभी वृद्धो को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
10. वृद्धजन हमारी पूंजी हैं, हमारे वट्वृक्ष हैं, हमारी धरोहर हैं, हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं, जिनकी छाँव के नीचे स्वर्ग है। सुख-सुविधाओं की लालसा में जिस आधुनिकता के पीछे मनुष्य भाग रहा है वह एक छलावा मात्र है। नई पीढ़ी के लोग पुरानी पीढ़ी के लोगों को 'आउट आफ डेट' मानते हैं परन्तु वे ये भूल जाते हैं कि आज जो पुराना है, कल वह भी नया था आज जो नया है वह भी कल पुराना होगा। आवश्यकता है आज का युवा इस बात को समझे कि जिस प्रेम और सम्मान की उसे अपने संध्याकाल में जरूरत होगी वह आज अपने बुजुर्गों को भी प्रदान करें। अंत में मैं बस इतना ही कहना चाहूँगी कि बुजुर्ग हमारे सिरमौर हैं, उनकी उपेक्षा न करें, उनका सम्मान करें, उनके साथ सामंजस्य स्थापित करें और उनकी भावनाओं का आदर करें तभी हम सच्चे भारतीय कहलाने के अधिकारी होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह, टी.बी., भारत में वृद्धजनों की समस्या एवं प्रकृति, समाजशास्त्र, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2014, पृ0 108-117*
2. *गुप्ता, एम.एल.,गुप्ता, विमलेश, बुजुर्गों की समस्याएँ, समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, 2013, पृ0 109-112*
3. *महाजन, धर्मवीर, महाजन, कमलेश, भारत में वृद्धों की समस्याएँ, भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएँ, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2005, पृ0 154-166*
4. *शर्मा, जी.एल., शर्मा, बुजुर्गों की समस्या, समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, 2015, पृ0 55-63*
5. *गुप्ता, एम.एल.,शर्मा, बुजुर्गों की समस्याएँ, समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, 2009, पृ0 178-181*
6. *अग्रवाल गिरिराजशरण, वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृ0 115-116*
7. *राय, सत्येन्द, वृद्धावस्था में सुखी जीवन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ0 53-56*
8. *शर्मा, सुनील, भारतीय परिवारों में कम हो रहा है बुजुर्गों का सम्मान, 2018 www.partika.com>relationship*
9. *दृष्टि, आई.ए.एस., परिवार की देखभाल के लिए बुजुर्गो को करना पड़ता है समझौता: अध्ययन, 2018 www.drishtiias.com>hindi*
10. *National seminar on care for the Aged shifting Responsibilities, I.N.(P.G.) College, Meerut, 2007*
11. *निखिल सर्वेक्षण, भारत में 52.4 प्रतिशत बुजर्ग उत्पीड़न का शिकार, 2018, www. livehindustan.com*